ब्रिस्बेन टेस्ट : एक टाई ने दो देशों को बाँध दिया

दिगम्बर व्यास

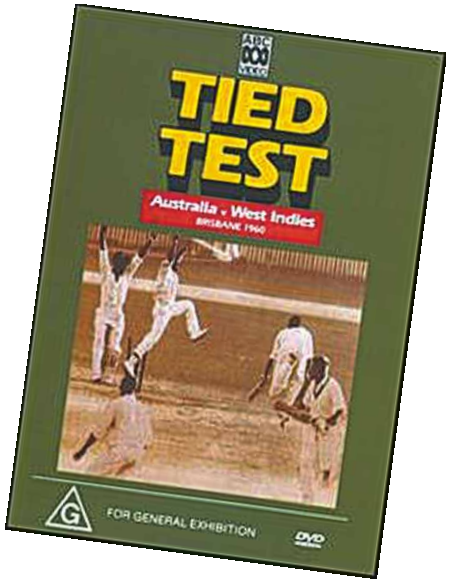

1960 के ब्रिस्बेन टेस्ट जैसा मैच लाखों में एक होता है।

स्थान : ऑस्ट्रेलिया का सिडनी हवाई अड्डा

तारीख : 1 नवम्बर 1960

फ्रैंक वॉरेल की कप्तानी में वेस्टइंडीज़ क्रिकेट टीम सिडनी हवाई अड्डे पर उतरी। आमतौर पर जब कोई अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट टीम किसी देश का दौरा करती है, तो उसका भव्य स्वागत किया जाता है। मेज़बान देश के वरिष्ठ अधिकारी उनके स्वागत के लिए उपस्थित होते हैं। प्रेस कांफ्रेंस होती हैं। स्वागत भाषण दिए जाते हैं। लेकिन जब वेस्टइंडीज़ की टीम सिडनी पहुँची तो उसका स्वागत करने के लिए आधिकारिक तौर पर केवल एक व्यक्ति हवाई अड्डे पर था – ऑस्ट्रेलियाई टीम का कप्तान रिची बेनो। ऐसा क्यों हुआ? क्यों बड़ी संख्या में क्रिकेट प्रशंसक वेस्टइंडीज़ टीम का स्वागत करने के लिए नहीं पहुँचे थे?

जब वेस्टइंडीज़ वेस्टइंडीज़ नहीं था...

1960 तक टेस्ट क्रिकेट का इतिहास 83 साल पुराना हो चुका था। विभिन्न टीमों के बीच 502 टेस्ट मैच खेले जा चुके थे। ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज़ के बीच भी 15 टेस्ट मैच खेले जा चुके थे। लेकिन तब स्थिति अलग थी। तब वेस्टइंडीज़ के ज़्यादातर खिलाड़ी गोरे अँग्रेज़ थे। 250 से भी ज़्यादा सालों से गुयाना और त्रिनिदाद, टोबैगो, जमैका व बारबाडोस द्वीपों पर ब्रिटेन का राज था। इन द्वीपों में रहने वाले अँग्रेज़ क्रिकेटरों की मिलीजुली टीम वेस्टइंडीज़ के नाम से अन्य देशों के खिलाफ खेला करती थी। मज़ेदार बात यह है कि वेस्टइंडीज़ नाम का कोई देश है ही नहीं। गुयाना और कैरिबियन सागर में स्थित त्रिनिदाद, टोबैगो, जमैका, बारबाडोस आदि जैसे द्वीपों का समूह ही वेस्टइंडीज़ के नाम से जाना जाता है। इन द्वीपों को जोड़ने वाली बड़ी चीज़ यही थी कि इन सभी पर ब्रिटेन का राज था।

समय बीतता गया। धीरे-धीरे खासकर द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इन द्वीपों में बसे ब्रिटिश अपने देश की गिरती अर्थव्यवस्था को बचाने ब्रिटेन लौटने लगे। ऐसे में वेस्टइंडियन क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड अपनी टीम में स्थानीय प्रतिभाओं को लेने पर मजबूर हो गया। इस तरह अफ्रीकी मूल के लेरी कांस्टेनटाइन और भारतीय मूल के सोनी रामादीन वेस्टइंडीज़ के ग्यारह खिलाड़ियों में अपना स्थान बना पाने में सफल रहे। और फिर एक समय ऐसा भी आया जब वेस्टइंडीज़ की टीम में केवल एक गोरा खिलाड़ी रह गया – विकेटकीपर गेरी अलेक्जेंडर। गोरा होने की वजह से उसी को कप्तान होना था। एक अश्वेत की कप्तानी में कोई गोरा खेले यह तो सोचा भी नहीं जा सकता था। टीम में उसका होना ज़रूरी था। वरना रंग को लेकर बेहद पूर्वाग्रही ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड अश्वेतों से भरी टीम को अपने यहाँ बुलाता ही नहीं। अन्ततः ऑस्ट्रेलिया ने 1960 में एक गोरे की कप्तानी वाली वेस्टइंडीज़ क्रिकेट टीम को पाँच टेस्ट मैच व कुछ अन्य मैच खेलने के लिए अपने यहाँ आमंत्रित किया।

कप्तान हम में से क्यों नहीं?

इस बीच वेस्टइंडीज़ में एक अश्वेत कप्तान की माँग ज़ोर पकड़ने लगी थी। कई प्रमुख हस्तियाँ इसका समर्थन कर रही थीं। गैरी सोबर्स, वेसली हाल और जोए सोलोमन जैसे अफ्रीकी मूल और रोहन बाबूलाल कन्हाई व सोनी रामादीन जैसे भारतीय मूल के खिलाड़ी भी अश्वेत कप्तान की माँग पर अड़ गए। आखिरकार बोर्ड ने अफ्रीकी मूल के ऑलराउंडर फ्रैंक वॉरेल को टीम की बागडोर थमा ही दी। गेरी अलेक्ज़ेंडर को केवल विकेटकीपर के रूप में टीम में जगह दी गई।

यहाँ दो बातें ध्यान में रखी जाने वाली हैं। एक, भले ही अश्वेत टीम ऑस्ट्रेलिया जा रही थी, लेकिन उनके द्वीपों

खुले दिमाग के वॉरेल ने रिची बेनो से कहा कि वे दौरे को लेकर चिन्तित नहीं हों और हार-जीत की फिक्र न करके केवल खेल का लुत्फ उठाएँ।

पर अब भी ब्रिटेन का शासन था। अफ्रीकी मूल के खिलाड़ी उन अफ्रीकियों के वंशज थे जिन्हें इन द्वीपों पर गन्ने के खेतों में काम करने के लिए गुलाम बनाकर लाया गया था। भारतीय मूल के खिलाड़ी भारतीय बंधुआ मज़दूरों के वंशज थे। दूसरी बात, एक नीग्रो के हाथ में वेस्टइंडीज़ टीम की कमान को लेकर ऑस्ट्रेलिया में विरोध पनप रहा था। स्वयं ऑस्ट्रेलियाई सरकार रंगभेद की नीति की समर्थक थी। इसलिए लोगों द्वारा एक अश्वेत कप्तान की टीम को नापसन्द करने पर कोई आश्चर्य नहीं था। यही कारण था कि वेस्टइंडीज़ टीम का स्वागत करने के लिए हवाई अड्डे पर केवल ऑस्ट्रेलियाई कप्तान रिची बेनो ही उपस्थित थे। हवाई अड्डे पर मौजूद अन्य श्वेत ऑस्ट्रेलियाई वॉरेल, सोबर्स और अन्य खिलाड़ियों को घूरकर देख रहे थे। रिची बेनो ने बताया कि हवाई अड्डे पर वेस्टइंडीज़ खिलाड़ियों की उपस्थिति श्वेत यात्रियों के लिए घृणास्पद थी। इससे स्टेडियम में भी वेस्टइंडीज़ के खिलाड़ियों के साथ होने वाले बर्ताव का अन्दाज़ लगाया जा सकता था। लेकिन खुले दिमाग के वॉरेल ने रिची बेनो से कहा कि वे दौरे को लेकर चिन्तित नहीं हों और हार या जीत की फिक्र न करके केवल खेल का लुत्फ उठाएँ।

फ्रैंक वॉरेल

खेल भावना से खेलें....

बेनो की ठुड्डी को छूकर वॉरेल वहाँ से चले गए। इसका मतलब उन्हें सांत्वना देना था या चुनौती? बेनो नहीं जानते थे कि उनकी टीम के अक्खड़ और पूर्वाग्रह से ग्रस्त साथी वेस्टइंडीज़ के खिलाफ खुले दिमाग से खेलेंगे या नहीं। लेकिन इसके उलट ऑस्ट्रेलियन क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के चेयरमैन ब्रैडमैन इस बात को लेकर निश्चिंत थे कि ऐसा नहीं होगा। उन्होंने ब्रिस्बेन टेस्ट मैच खेलने वाले सभी ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों की बैठक बुलाई। और सभी को साफ शब्दों में कह दिया कि यह सीरिज़ उन्हीं के लिए खुली है जो खेल भावना से खेलेंगे।

कहानी सीरिज़ के पहले मैच की...

पहला टेस्ट मैच 9 दिसम्बर 1960 को शुरू हुआ। पहले दिन स्टेडियम में केवल दो हज़ार दर्शक आए थे। घमंडी ऑस्ट्रेलियाइयों को उस टीम का मैच देखने में कोई दिलचस्पी नहीं थी जिसे वे कुछ समझते ही नहीं थे। जिनकी दिलचस्पी थी, उन्होंने भी टिकट पर पैसे "बर्बाद" करने की बजाय रेडियो पर कमेंट्री सुनना पसन्द किया। लेकिन ऑस्ट्रेलियाइयों को जल्दी ही एहसास हो गया कि मेहमान टीम को हल्के में नहीं लिया जा सकता है। केवल 65 रनों पर पहले तीन विकेट गँवाने के बाद कप्तान वॉरेल और गैरी सोबर्स ने पाँचवें विकेट के लिए 152 मिनट में 174 रनों की साझेदारी कर टीम को संकट से बाहर निकाल लिया। पहले दिन का खेल खत्म होने पर वेस्टइंडीज़ का स्कोर था सात विकेट पर 359 रन। दूसरे दिन विकेटकीपर गेरी अलेक्ज़ेंडर और दसवें नम्बर पर बल्लेबाज़ी करने आए वेसली हाल ने जमकर हाथ दिखाए और टीम 453 रनों का स्कोर खड़ा करने में सफल रही। वेसली हाल ने आतिशी बल्लेबाज़ी करके 50 रन बनाए। अलेक्ज़ेंडर ने 60 रनों का योगदान दिया।

इतना बड़ा स्कोर खड़ा करने की बजाय यह बात ज़्यादा चौंकाने वाली थी कि वेस्टइंडीज़ के खिलाड़ी किस तरह से खेले। वेसली हाल ने 50 रन केवल 69 मिनट में बनाए। सोबर्स ने 125 मिनट में ही अपना शतक पूरा कर लिया और 132 रनों की पारी के लिए केवल 174 मिनट खर्च किए। महज़ 65 रनों पर तीन विकेट गिरने के बाद सोबर्स मैदान में आए थे। लेकिन उन्होंने आते ही स्ट्रोक जमाने शुरू कर दिए। क्रिकेट पत्रकारों को बाद में पता चला कि कप्तान फ्रैंक वॉरेल ने अपने बल्लेबाज़ों से कह रखा था कि उन्हें विकेट गिरने की चिन्ता नहीं करनी है, बल्कि खुलकर स्ट्रोक जमाते हुए बढ़िया क्रिकेट खेलनी है।

ऑस्ट्रेलिया ने अपने ही ढंग से जवाब दिया। स्टार बल्लेबाज़ नॉर्मन ओ'नील के शानदार 181 रनों की बदौलत 505 रनों का स्कोर खड़ा कर लिया। इस तरह उसे पहली पारी में 52 रनों की बढ़त मिली। तीन दिन गुज़र चुके थे और दोनों टीमों के स्कोर को मिलाकर देखें तो 958 रन बन चुके थे। यानी मैच ड्रॉ की ओर बढ़ रह था। लेकिन यहीं दोनों टीमों के महान कप्तानों की प्रकृति, व्यक्तित्व और नेतृत्व क्षमता सामने आई। वॉरेल ने अपने बल्लेबाज़ों को तेज़ी से रन बनाने के निर्देश दिए। इसका नतीजा यह रहा कि पूरी वेस्टइंडीज़ टीम पाँचवें दिन सुबह 284 रनों पर आउट हो गई। लेकिन इससे खेल में जान आ गई। ऑस्ट्रेलिया को 310 मिनट में 233 रन बनाने का लक्ष्य मिला। रिची बेनो ने इस चुनौती को स्वीकार किया। लेकिन केवल 57 रनों पर उनके 5 खिलाड़ी पैवेलियन लौट चुके थे। अब 200 मिनट में 176 रन बनाने थे।रिची बेनो ने इस चुनौती को स्वीकार किया। लेकिन केवल 57 रनों पर उनके 5 खिलाड़ी पैवेलियन लौट चुके थे। अब 200 मिनट में 176 रन बनाने थे।

कितने ओवर नहीं कितना समय

उन दिनों स्कोरिंग रेट समय से तय हुआ करता था, न कि आज की तरह गेंद या ओवर से। यानी केवल समय की सीमा थी। इसका मतलब यह हुआ कि यह तय था कि पूरे मैच में, दिनभर के खेल में और प्रत्येक सत्र में कितने घंटे होंगे। उन दिनों के स्ट्राइक रन रेट के हिसाब से प्रत्येक घंटे में 53 रन बनाने का लक्ष्य कठिन तो था, पर असम्भव नहीं। लेकिन ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी अगले घंटे में केवल 35 रन ही जोड़ सके और इस दौरान एक विकेट और गँवा बैठे। अब स्कोर था 92 पर 6 और वेस्टइंडीज़ की जीत निश्चित जान पड़ रही थी।

मैच का रोमांचक मोड़

चायकाल तक ऑस्ट्रेलिया का स्कोर 108 पर 6 था और मैच के आखिरी सत्र का खेल ही बाकी था। इस सत्र में 120 मिनट में ऑस्ट्रेलिया को 124 रन बनाने थे, जबकि केवल चार विकेट ही हाथ में थे। ऐसे में समझदारी इसी में थी कि ऑस्ट्रेलिया ड्रॉ के लिए खेले क्योंकि पुछल्ले कितना दम लगा पाएँगे किसी को पता नहीं था। लेकिन विकेट पर जमे हुए दो ऑलराउंडर रिची बेनो और मध्यम गति के तेज़ गेंदबाज़ एलन डेविडसन कुछ और ही सोचकर आए थे। चायकाल के बाद दोनों ने आक्रामक खेल जारी रखा और अपने दमदार खेल से मैच के नतीजे को सस्पेंस में डाल दिया। अन्तिम सत्र शुरू होने तक दोनों ही टीमों के आक्रामक खेल ने ऑस्ट्रेलियाई लोगों में दिलचस्पी जगा दी। यहाँ के बड़े शहरों में कामकाज थम-सा गया। लोग रेडियो सेट से चिपककर कमेंट्री सुनने लगे। स्थानीय टीवी पर हो रहे मैच के सीधे प्रसारण को देखने के लिए ब्रिस्बेन में लोगों की भीड़ लग गई।

अब 75 मिनट में 80 रनों की दरकार थी। फिर 60 मिनट में 60 रन... अब 30 मिनट में 27 रन चाहिए थे जबकि चार विकेट बाकी थे। अब आठ गेंद के पाँच ओवर बचे थे। पासा पलट रहा था। बाज़ी वेस्टइंडीज़ के हाथों से ऑस्ट्रेलिया के हाथों में जाती नज़र आ रही थी।

वॉरेल ने नई गेंद ले ली। वेसली हाल को गेंद सौंपते हुए उन्होंने कहा, "यह मत सोचो कि उन्हें 27 रन बनाने हैं। सोचो कि उनके पास केवल चार विकेट बाकी हैं।" उधर ऑस्ट्रेलियाई कप्तान रिची बेनो बचे हुए चार विकटों की बजाय केवल 27 रनों पर ध्यान लगाए थे। कई साल बाद गैरी सोबर्स ने अपनी किताब *ट्वेंटी इयर्स एट द टॉप* में लिखा, "हमने कभी भी यह नहीं सोचा कि मैच हमारी पकड़ से दूर है। फ्रैंक लगातार हमसे कहते रहे कि हम जीत रहे हैं। रिची का भी यही सोचना था। दोनों महान कप्तानों के दिमाग में एक ही बात थी कि उनकी टीम जीतेगी।"

दोनों बल्लेबाज़ों ने हाल के ओवर में 8 रन लिए। दूसरे छोर से सोबर्स ने 9 रन दे दिए। अब 15 मिनट में 10 रन चाहिए थे और फिर 7 रन। चार विकेट अब भी बाकी थे। इसी क्षण जोए सोलोमन के एक सटीक थ्रो से एलन डेविडसन रन आउट हो गए। डेविडसन और बेनो ने सातवें विकेट के लिए रिकॉर्ड 134 रनों की साझेदारी की। उन्होंने 6 विकेट पर 92 रन की स्थिति से ऑस्ट्रेलिया को जीत के दरवाज़े पर ला खड़ा किया था। अब मैच का आखिरी ओवर बाकी थी। ऑस्ट्रेलिया का स्कोर था 227/7 और उसे जीत के लिए आठ गेंदों पर छह रन चाहिए थे। तीन विकेट अब भी बाकी थे। आखिरी ओवर का ज़िम्मा वेसली हाल को दिया गया।

ऑस्ट्रेलियाइयों को जल्दी ही अहसास हो गया कि भ्रमणकारी टीम को हल्के में नहीं लिया जा सकता।

गेंदें सात, तीन रन और दो विकेट

पहली गेंद: नए बल्लेबाज़ वैली ग्राउट के सीने के नीचे गेंद लगी। स्ट्राइक लेने के लिए बेनो तेज़ी से एक रन के लिए दौड़े। अब स्कोर हो गया 228/7, सात गेंदें बाकी, जीत के लिए चाहिए पाँच रन, तीन विकेट शेष।

दूसरी गेंद: रिची बेनो ने हुक शॉट खेलने की कोशिश की, लेकिन विकेट के पीछे विकेटकीपर गेरी अलेक्ज़ेंडर ने उन्हें लपक लिया। अब स्कोर

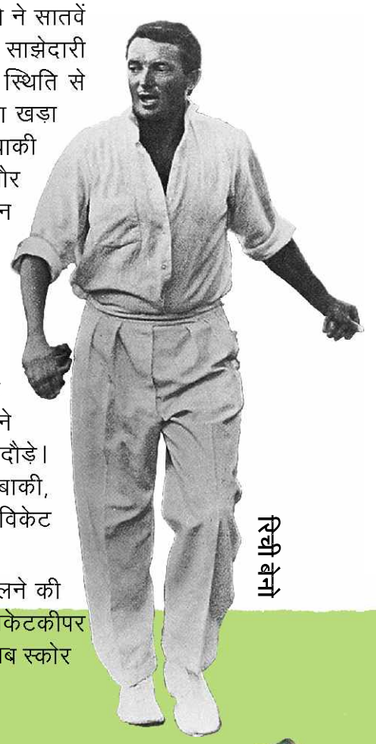

रिची बेनो

228/8, छह गेंदें बाकी, जीत के लिए चाहिए पाँच रन, दो विकेट शेष।

तीसरी गेंद: नए बल्लेबाज़ इयान मेककिफ ने गेंद को मिडऑफ की ओर खेल दिया, लेकिन कोई रन नहीं बना। स्कोर अब भी 228/8, पाँच गेंदें बाकी, जीत के लिए पाँच रनों की दरकार, दो विकेट शेष।

पाँचवीं गेंद: वेसली हाल के बाउंसर से बचने की कोशिश में ग्राउट ने शॉर्ट मिडविकेट की ओर कैच उछाल दिया। जहाँ कन्हाई कैच लेने के तैयार खड़े थे। लेकिन इसी दौरान हाल भी कैच लेने के लिए दौड़ पड़े। दोनों के बीच गफलत में कैच छूट गया। और बल्लेबाज़ों ने एक रन भी ले लिया। अब स्कोर हो गया 230/8, तीन गेंदें बाकी, जीत के लिए तीन रनों की दरकार, दो विकेट शेष।

छठी गेंद: इयान ने स्क्वेअर लेग बाउंड्री की ओर ज़ोरदार शॉट लगाया। बल्लेबाज़ों ने दो रन पूरे किए और तीसरे विजयी रन के लिए दौड़ पड़े। सीमा रेखा की ओर जाती गेंद पर हुंटे चीते की तरह झपटे और उसे अन्दर ही रोक लिया। और फिर सीधे विकेटकीपर गेरी अलेक्ज़ेंडर के हाथों में थ्रो किया। गेंद को पकड़कर गेरी ने स्वयं भी स्टंप की ओर डाइव लगाई और ग्राउट के क्रीज़ में पहुँचने से पहले ही स्टम्प बिखेर दिए। ग्राउट रन आउट हो गए। अब स्कोर बराबर, दो गेंद बाकी, विकेट भी एक शेष।

सातवीं गेंद: आखिरी बल्लेबाज़ बाएँ हाथ के लिंडसे क्लाइन ने स्क्वेअर लेग की ओर खेला और रन लेने के लिए दौड़ पड़े। अपने समय के शानदार क्षेत्ररक्षक सोलोमन तेज़ी से गेंद पर झपटे। और इतना सटीक थ्रो फेंका कि स्टम्प बिखर गए। इयान मेककिफ क्रीज़ से कुछ इंच ही दूर थे और रन आउट हो गए। स्कोर अब भी बराबर था, लेकिन ऑस्ट्रेलिया के सारे बल्लेबाज़ आउट हो चुके थे। चूँकि दोनों ही टीमों ने बराबर रन बनाए थे इसलिए मैच को आधिकारिक तौर पर टाई घोषित कर दिया गया।

वेस्टइंडीज़ का स्कोर 453 + 284 = 737 रन

ऑस्ट्रेलिया का स्कोर 505 + 232 = 737 रन

क्रिकेट इतिहास के पहले टाई मैच और शायद सबसे महान मैच को देखने के लिए केवल दो हज़ार दर्शक ही स्टेडियम पहुँचे थे। शायद किसी ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि यह मैच इतना काँटे का होगा। मैच का आखिरी ओवर इतने दिलों की धड़कनें बढ़ाने वाला था कि कमेंट्री सुनते हुए 16 लोगों को दिल का दौरा पड़ गया और एक की तो मृत्यु भी हो गई।

(इस दिलकश लेख का अन्तिम भाग आप चकमक के अगले अंक में पढ़ेंगे)

फॉर्म-4 (नियम-8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी

प्रकाशन का स्थान	:	भोपाल	सम्पादक का नाम	:	सुशील शुक्ल
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
प्रकाशक का नाम	:	सी. एन. सुब्रह्मण्यम्	पता	:	एकलव्य ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कालोनी, शिवाजी नगर भोपाल 462 016
राष्ट्रीयता	:	भारतीय			
पता	:	एकलव्य ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल 462 016			
मुद्रक का नाम	:	सी. एन. सुब्रह्मण्यम्	उन व्यक्तियों के नाम,	:	रैक्स डी. रोज़ारियो
राष्ट्रीयता	:	भारतीय	राष्ट्रीयता और पते	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल 462 016	जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	:	एकलव्य ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर , भोपाल 462 016

मैं सी. एन. सुब्रह्मण्यम् यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

20 जनवरी 2010

(प्रकाशक के हस्ताक्षर)
सी. एन. सुब्रह्मण्यम्